जैन धर्म के सिद्धांत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय चिंतन परम्परा में अध्यात्म की दो धारायें प्रवाहित हुई हैं। एक है वैदिक परम्परा तो दूसरी है श्रमण परम्परा। श्रमण परम्परा में जैन धर्म और बौद्ध धर्म का विकास हुआ है। जैनधर्म मानवतावादी धर्म है। इस धर्म में निवृत्तपरक विचारधारा को अधिक महत्व दिया गया है। जैनधर्म भगवान् महावीर के वचनों और आगमों के सिद्धांतों को मानकर चलता है। इसलिए इस धर्म में आत्मा, ज्ञान, जीव–जगत की व्याख्या अनेकांतिक दृष्टि से की गई है। इस धर्म का विकास भारत भूमि पर हुआ। जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांतों में जगत मीमांसा आत्मवाद, कर्मवाद और मोक्ष इत्यादि प्रमुख हैं। इन्हीं के आधार पर जैन धर्म के स्वरूप को स्पष्ट किया जा रहा है।

सम्पूर्ण सृष्टि को देखकर प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि इसका स्वरूप क्या है? इसका संचालन कौन करता है? मैं कौन हूं? कहां से आया हूं? इत्यादि अस्तित्व संबंधित प्रश्न स्वयं ही मन में उत्पन्न हो जाते हैं। जहां तक जगत का प्रश्न है जैन धर्म के अनुसार जगत शाश्वत है। जगत का नियंता कोई ईश्वर नहीं, बल्कि छः द्रव्यों के आधार पर यह जगत् स्वयं संचालित होता है। द्रव्य के मुख्यतः दो भेद हैं– जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य। जीव या आत्मा जैन दर्शन में एक स्वतंत्र द्रव्य है। इसका लक्षण है–चेतना। चेतना को जीव का असाधारण धर्म बतलाया गया है– **चेतना लक्षणो जीवः।** इस लोक में केवल आत्मा ही चेतन तत्व है। जहां–जहां चेतना दिखाई देती है, वहां–वहां आत्मा है। जैन धर्म में सभी जीवों में आत्मा को समान माना गया है। जो भेद दिखलाई देता है, वह कर्मों के कारण है। आत्मा में कोई भेद नहीं है।

अजीव द्रव्य वे द्रव्य हैं जिसमें चेतना नहीं होती। अजीव द्रव्य के पांच भेद हैं– पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल। यह विश्व छह द्रव्यों की रचना है। इसमें दो प्रकार के जीव हैं–

मुक्त जीव, संसारी जीव। मुक्त जीव को परमात्मा, ईश्वर, सर्व शक्तिमान, सिद्ध, शुद्ध जीव, आदि नाम से जाना जाता है। इन मुक्त जीवों के अतिरिक्त सभी जीव संसारी जीव हैं। जैन धर्म में जीव शब्द आत्मा और शरीर दोनों के सन्दर्भ में है। यहां पर जीव का संबंध सांसारिक जीवों के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है। जैन धर्म के अनुसार संसार में जितने शरीर हैं उतने जीव हैं। जैन धर्म में जीव का लक्षण, उपयोगमय, कर्त्ता, स्वदेह परिणामी, संसारी रूप में बताया गया है। जीव का उपयोग लक्षण चेतना है। विश्व में कोई भी ऐसा जीव या प्राणी नहीं है, जिसमें चेतना विद्यमान न हो अर्थात अस्तित्व के रूप में प्रत्येक जीव चेतनयुक्त है। संसार में जन्म लेने वाला जीव अज्ञान के कारण ऐसे कर्मों का अर्जन करता है, जिसके कारण उसका बंधन होता है। इसलिए जैन धर्म में प्रत्येक जीव अपने कर्मो का स्वयं जिम्मेदार है और कर्म के परिणामों की भी जिम्मेदारी स्वयं उसकी है।

अजीव द्रव्यों में पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्य आते हैं। सृष्टि की रचना इन्हीं द्रव्यों के सहयोग से हुई है। जैन धर्म में संसार को अनादि और अनन्त मानते हुए जगत को यथार्थ सत्ता के रूप में परिभाषित किया गया है। जगत स्वयं में स्वतंत्र अस्तित्ववान है। यह अपनी सत्ता के लिए किसी चेतन या ईश्वर तत्व पर आधारित नहीं है। जैन धर्म में भौतिक वस्तुओं की सत्ता को स्वीकार करते हुए उसका नामकरण पुद्गल के रूप में किया है। पुद्गल का सामान्य अर्थ है भौतिक वस्तु। पुद्गल का लक्षण करते हुए इसे जैन धर्म में रस, गंध और स्पर्शवान् कहा गया है। जिस द्रव्य में उपरोक्त विशेषताएं मिलती हैं उसमें एक निश्चित आकार भी अवश्य होता है, इसलिए पुद्गल रूपी पदार्थ है। पुद्गल मुख्यतः दो प्रकार से समझा जा सकता है– परमाणु व स्कंध। पुद्गल का अंतिम सूक्ष्मतम भाग जिनका पुनः विभाजन न किया जा सके वह अणुरूप है।

धर्म द्रव्य जीव तथा पुद्गल को गमन कराने में उदासीन सहायक होता है। पानी में चलती हुई मछली को चलने में धर्म द्रव्य उदासीन रूप से सहायता करता है। ठहरी मछली को पानी चलाता नहीं है। गमन करते हुए जीव और पुद्गल को गमन करने में धर्म द्रव्य सहकारी होता है। जो द्रव्य लोक में स्थितशील सभी द्रव्यों जीव और पुद्गलो की स्थिति में अनन्य सहायक होता है, वह अधर्म द्रव्य है। इसके बिना किसी

भी प्रकार की स्थिति सम्भव नहीं है। ठहरते हुए पथिक को वृक्ष की छाया ठहरने में उदासीन सहायक है।

जैन धर्म में खाली स्थान को आकाश कहते है। आकाश सभी वस्तुओं को आश्रय प्रदान करता है। इसे एक सर्व व्यापक अखण्ड, अमूर्त, अवर्ण द्रव्य के रूप में स्वीकार किया गया है। यद्यपि आकाश एक अखण्ड द्रव्य है, परन्तु प्रदेशों की अपेक्षा अनन्त प्रदेश, खण्ड हैं। इसके मध्यवर्ती कुछ भाग में ही सब द्रव्य अवस्थित है। इस भाग का नाम लोक है, शेष भाग को अलोक कहते हैं। काल शब्द से सभी परिचित हैं। प्रायः काल, समय, को मापने के लिए वर्ष, महीनें, दिन, प्रहर, घन्टे, मिनट, सेकेंड, मुहूर्त, क्षण, पल आदि का प्रयोग होता है। विश्व के प्रत्येक धर्म, दर्शन और विज्ञान का मूल आधार काल ही है। इस प्रकार जैन धर्म में सभी सिद्धांतों के केन्द्र में आत्मा को प्रमुख स्थान दिया गया है।